श्री भजनाश्रम
श्री नर्मदांचल,
अमरकंटक
जिला - शहडोल (म० प्र०)

शिक्षा-योजना

इस योजना का उद्देश्य, शिक्षा का मानवीयकरण करना है। शिक्षा का मानवीयकरण करने का तात्पर्य वर्तमान में दिए जाने वाले व्यवसाय शिक्षा के साथ मानवीयता पूर्ण व्यवहार शिक्षा को समावेश करने से है। अस्तु, शिक्षा को मानवीयकरण करने के लिए प्रेरित विपरीत परिस्थितियाँ, तथा अनुकूल स्थितियाँ मानव परंपरा के लिए उसकी आवश्यकता, अस्तित्व में उसकी नित्य संभावना तथा विकास और गुणात्मक विकास क्रम में, समीचीन स्रोत को स्पष्ट किया गया। साथ ही उसका संक्षिप्त स्वरूप प्रस्तावित है।

परिस्थिति:-

शिक्षा को मानवीयकरण करने के लिए प्रेरित विपरीत परिस्थितियाँ जो प्रधानतः मनुष्य से ही निर्मित हुआ निम्न प्रकार से है,

वर्तमान शिक्षा (साक्षरता, तकनीकी विज्ञान तथा आकलनात्मक ज्ञान) का यांत्रिक होना एवं उसके क्रम में मनुष्य के लिए समाधान व प्रामाणिकता की ओर निश्चित दिशा का स्पष्ट न होना।

- प्रचार, प्रकाशन और प्रदर्शन के द्वारा अपराध और श्रृंगारिकता को सर्वाधिक रूप में सामान्य जन मानस तक पहुंचाने का व्यवसाय करना।
- व्यवस्था तंत्र भय व प्रलोभन पर आधारित होना और उससे ग्रसित होना।
- मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक आचरणों में अंतर्विरोध होना फलतः औसत मनुष्य का, शिक्षा, व्यवस्था, आचरण और संविधान में पहचान न हो पाना।

उपर्युक्त यथा स्थिति के फलस्वरूप प्रबुद्धता में विश्वास रखने वाले प्रत्येक मनुष्य इन स्थितियों से उबरना चाहता है जिसके लिए विकल्प की आवश्यकता उत्पन्न हो चुकी है

इस मुद्दे पर लोक मानस, प्रबुद्ध जन मानस, राष्ट्र मानस
शिक्षा मानस एवं व्यवस्था मानस का सर्वेक्षण किया गया है
और किया जा सकता है! जिससे यह स्पष्ट हुआ कि इन
सब परिस्थितियों के मूल में भौतिक तथा अधिभौतिक
वादों के बीच अंतर्विरोध ही प्रधान कारण है। क्योंकि
अधिभौतिकवाद के अनुसार चेतना से पदार्थ उत्पन्न
होता है तथा भौतिकवाद के अनुसार पदार्थ से चेतना
उत्पन्न व निष्पन्न होता है, जो कि न तो प्रमाणित है
और न ही वर्तमान!

स्थितिः- शिक्षा को मानवीयकरण करने के लिए
प्रेरक स्थितियाँ निम्न बिंदुओं में स्पष्ट है।

- स्थिति में व्यवस्था ही सार्वभौम आदर्श, लक्ष्य
  कर्तव्य, दायित्व और मानव परम्परा का गति और
  गौरव है!
- स्थिति में अस्तित्व ही सह-अस्तित्व, सम्पूर्ण भाव
  तथा व्यवस्था है!
- स्थिति में अस्तित्व में ही विकास क्रम (नियति क्रम)
  विकास और व्यवस्था है!
- स्थिति में अस्तित्व ही जीवन की मूल व्यवस्था है।
- स्थिति में अस्तित्व ही जीवन जागृति की व्यवस्था है।
- स्थिति में अस्तित्व ही सम्पूर्ण ऊर्जा, बल, शक्ति,
  मात्रा, रचना और व्यवस्था है।
- व्यवस्था में जागृति क्रम ही शिष्टता है। जीवन-
  जागृति स्वयं श्रेष्ठता और तृप्ति का अभिव्यक्ति
  सम्प्रेषणा और प्रकाशन है। शिक्षा में इसका धारक
  वाहक, प्रमाण और स्वरूप, शिक्षक ही है।
- व्यवस्था - अनुभव में प्रामाणिकता → जानना + मानना
  बौद्धिकता में समाधान - सम्बन्धों की पहचान व
  मूल्यों का निर्वाह!

विवेचना में विभव — वर्तमान में विश्वास व भविष्य
में विश्वास की पूर्ण संभावना

विश्लेषण में सहअस्तित्व - पूरकता …

आवश्यकता:- शिक्षा को मानवीयकरण करने के लिए प्रेरित आवश्यकताएं निम्न हैं:-

• प्रत्येक मनुष्य में पायी जाने वाली कल्पनाशीलता व कर्म स्वतंत्रता को प्रयोग करने के क्रम में स्व अस्तित्व को स्वीकारता ही है। इसी तथ्य के आधार पर उसके तृप्ति बिंदु को तलाशने की आकांक्षा निहित रहती है। इसी क्रम में मानव, में, से, के लिए सार्वभौम व्यवस्था अखंड समाज और अखंड सामाजिकता को पहचानना और निर्वाह करना एक आवश्यकता है। इसके लिए मानव तथा नैसर्गिक सम्बन्धों को पहचानना व निर्वाह करना आवश्यक है।

मानव अस्तित्व में सम्बन्धों व मूल्यों को निर्वाह करने के मूल में अस्तित्व और अस्तित्व में जीवन के प्रति निर्भ्रम होना एक आवश्यकता है।

प्रत्येक मनुष्य जिन जिन सम्बन्धों में विश्वास को निर्वाह कर पाता है, उन्हीं सम्बन्धों की परस्परता में वह अपनी उपयोगिता व प्रयोजनीयता को आकलित कर पाता है। इसी तथ्य के आधार पर मनुष्य के लिए अखंड समाज के अर्थ में सम्बन्धों को पहचानना और मूल्यों का निर्वाह करना एक आवश्यकता है।

• सामाजिक, आर्थिक व राज्यनैतिक व्यक्तित्व प्रतिष्ठा के लिए बौद्धिक समाधान और भौतिक समृद्धि एक आवश्यकता है।

• प्रत्येक मनुष्य में जीवन सहज आकांक्षा, स्वतंत्रता व स्वराज्य के रूप में विद्यमान है जिसे बहुआयामी अभिव्यक्तिशील मानव में उसे सफल बनाने के लिए … विवेक, विश्लेषण और योजना की

आवश्यकता है।

• प्रत्येक मनुष्य में व्यवसाय, व्यवहार, विचार और अनुभव में सामरस्य सूत्र, उसका क्रियान्वयन एक आवश्यकता है।

प्रत्येक मनुष्य शरीर यात्रा के आरंभ काल से अर्थात शिशु अवस्था से न्याय का याचक है, सही कार्य व्यवहार करना चाहता है और सत्य वक्ता है। इसलिए विद्यार्थी (व्यक्ति) में क्रमशः न्याय प्रदायी क्षमता, सही कार्य व्यवहार करने की योग्यता की स्थापना व सत्य वक्ता को यथावत परंपरा के रूप में बनाए रखने की पात्रता को, जागृत होना एक आवश्यकता है।

सम्भावना :- शिक्षा को मानवीयकरण करने के लिए प्रेरित संभावनाएं निम्न हैं-

मनुष्य की समस्त अनुभूतियां उसकी जागृति से सूचित हैं। जिसकी अभिव्यक्ति संप्रेषणा व प्रकाशन का प्रयोजन, व्यवस्था की भागीदारी में ही प्रमाणित होता है; क्योंकि इष्ट व्यवस्था ही है, न कि अव्यवस्था। अतः जागृति मूलक संस्कार बल (यथार्थ अवधारणा) उसके अनुकूल वातावरण के योग फल में शिक्षा समुच्चय का मानवीयकरण उसके फल स्वरूप शिक्षित प्रत्येक व्यक्ति - व्यवहार में सामाजिक (संबंधों की पहचान मूल्यों का निर्वाह) तथा व्यवसाय में स्वावलंबी होने की संपूर्ण संभावना है।

मनुष्य की कल्पनाशीलता एवं कर्म स्वतंत्रता क्रमशः समाधान व प्रामाणिकता में तृप्त होती है। मनुष्य अपनी मौलिकता सहित विकास क्रम में, सुख की अभीप्सा से विभिन्न परस्परताओं में क्रियाशील पाया जाता है। ये परस्परताएं मनुष्य मनुष्य व मनुष्य नैसर्गिक संबंधों के रूप में प्रसिद्ध हैं, जिन्हें मनुष्य जीवन सहज रूप से पहचान व निर्वाह कर तृप्त होता है। जीवन तृप्ति (प्रामाणिकता), विचार तृप्ति

(सर्वतोमुखी समाधान) (5) व्यवहार तृप्ति (न्याय सुलभता)
व्यवसाय तृप्ति (उत्पादन सुलभता, विनिमय सुलभता)..
के अर्थ में शिक्षा को मानवीयकरण पूर्वक सहज सफल
रूप देने की पूर्ण संभावना है।

• प्रत्येक मनुष्य जीवन जागृति पूर्वक अस्तित्व
समग्र को अर्थात सम्पूर्ण भाव व वस्तु को सह-अस्तित्व
के रूप में पहचानने और सह अस्तित्व में मानव को
अविभाज्य रूप में पहचानने और निर्वाह करने की नित्य
संभावना है।

प्रत्येक मनुष्य सह अस्तित्व में निर्भ्रम होता है
फलतः सामाजिक अखंडता के अर्थ में अथवा गति में
समाधान, समृद्धि, अभय एवं सह अस्तित्व के अविभाज्य
स्वरूप को पहचानने और निर्वाह करने की नित्य संभावना है।

• प्रत्येक मनुष्य में पाई जाने वाली अक्षय
शक्तियों के आधार पर आवश्यकता से अधिक उत्पादन
करने योग्य क्षमता, सम्पूर्ण वस्तुओं को सदुपयोग
और सुरक्षा करने योग्य योग्यता से संपन्न होना, नित्य
संभावना है।

मनुष्य जागृति पूर्वक ही अस्तित्व में नित्य वर्तमान
प्रकटता व उदात्तीकरण सिद्धान्तों के योग फल में शिक्षा
के मानवीयकरण पूर्वक मानव परम्परा सामरस्यता व
एक सूत्रता पूर्ण होने की नित्य सह-संभावना है।

○ प्रत्येक मनुष्य जीवन जागृति क्रम में जीवन
सहज रूप में ही व्यवस्था को वरता है। वह सार्वभौम
रूप में वर्तमान में विश्वास और उसकी निरंतरता है।
प्रत्येक मनुष्य शुभ चाहता है। उसका वर्तमान स्वरूप
समाधान, समृद्धि, अभय और सह अस्तित्व ही है।
सह-अस्तित्व, अस्तित्व सहज और समाधान, अभय,
समृद्धि जीवन जागृति सहज होना पाया जाता है।
जिसका व्यवहार गति न्याय सुलभता व विनिमय सुलभता
संयुक्त स्वरूप में व्याप्त है। न्याय मानव तथा
नैसर्गिक सम्बन्धों की पहचान और मूल्यों का निर्वाह

पूर्वक तथा विनिमय सुलभता श्रम नियोजन तथा उसके मूल्यांकन पूर्वक सार्वभौम होना पाया जाता है। अस्तु मानवीय व्यवहार, व्यवसाय, व्यवस्था, संविधान तथा आचरण में सामरस्य रूप देने की अर्थ में शिक्षा का मानवीय करण एक सहज संभावना है।

स्रोत:- शिक्षा को अथवा शिक्षा समुच्चय को मानवीयकरण करने के लिए प्रेरित नित्य स्रोत निम्न है—

अस्तित्व में विकास, जीवन, जीवन जागृति और रचनाएं नित्य वर्तमान हैं। विकास, परमाणु का ही इतिहास है। परमाणु में विकास होना पाया जाता है। इसलिए जीवन जागृति, नियति क्रम की अभीप्सा है। नियति क्रम में ही लक्ष्य स्पष्ट हुए हैं—। विकास और जीवन जागृति क्रम में जीवावस्था से प्रारंभ होकर मानव जो अपनी प्रामाणिकता के पद में जागृति का अनुभव करता है, मानव अस्तित्व में जड़ चैतन्य प्रकृति के संयुक्त साकार रूप में मिलता है। रचनाओं में शरीर रचना श्रेष्ठ है। उसमें भी मनुष्य शरीर रचना सर्वाधिक विकसित है। शरीर के द्वारा जीवन के प्रकाशित होने के क्रम में शरीर में जीवन्तता नियति सहज है। इसी क्रम में जीवन तृप्ति कामनाओं का शरीर व्यापार से संबंधित होने की स्थिति में मनुष्य रुचि-शील होता है, रुचिशील देखा जाता है। जब मनुष्य रुचि-शील होता है, तब जीवन तृप्तियों के स्रोतों से अछूता रह जाता है क्योंकि शरीर को ही जीवन मानने लगता है। रुचियों से घनीभूत हो जाता है। इन भ्रमित धारणाओं का समुचित निराकरण का स्रोत, मूल्य मूलक एवं लक्ष्य मूलक प्रणालियों के रूप में नित्य समीचीन है।

प्रत्येक मनुष्य जीवन तृप्ति की कामना से संपन्न है। जीवन तृप्ति प्रामाणिकता व समाधान है। जीवन तृप्ति जीवन जागृति का साक्ष्य है। इसलिए जीवन जागृति स्रोत के रूप में अस्तित्व में है ही, इसीलिए अस्तित्व ही स्रोत है।

प्रत्येक मनुष्य में अव्यवस्था की समझ

पीड़ा के रूप में है, यह सर्वेक्षण द्वारा पाया जाता है। ऐसी अव्यवस्था की कारकता-जब विकसित प्रकृति अविकसित प्रकृति के सदृश कार्य, व्यवहार, विचार, विन्यास करता है तभी उनमें अव्यवस्था की समझ हो पाती है।

उदाहरण के रूप में -

मानव जब मनुष्येतर जीवों के सदृश आचरण करने जाता है तब वह अव्यवस्था की समझ से पीड़ित होता है। इसका प्रधान सिद्धान्त यही है कि अस्तित्व में संपूर्ण सम्पूर्ण मनुष्येतर प्रकृति, क्रिया और कर्म करते समय में भी नियमों से नियंत्रित है और उसके परिणाम फल की स्थिति में भी नियमों से नियंत्रित है जबकि मनुष्य कर्म करते समय स्वतंत्र और फल भोगते समय में नियमों से नियंत्रित होने के लिए बाध्य है। इससे स्पष्ट हुआ कि अस्तित्व स्वयं विकास क्रम में व्यवस्था का स्वरूप होने के कारण उसमें प्रत्येक इकाई किसी न किसी पद में होती ही है। वह उसी पद में अपने "त्व" सहित व्यवस्था को स्पष्ट करता हुआ पाया जाता है — जैसे लोहा - लौहत्व के साथ, दूब - दूबत्व के साथ, गाय गायत्व के साथ व्यवस्था होना पाया जाता है। इसी क्रम में मानव "मानवत्व" के साथ व्यवस्था का स्वरूप है और समग्र व्यवस्था में भागीदार होना, अस्तित्व सहज सत्य है। 'मानवत्व' व्यवहार में अथवा मानव परंपरा में समाधान, समृद्धि, अभय और सहअस्तित्व की अविभाज्य अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा और प्रकाशन ही है, जो शिक्षा को मानवीयकरण करने के लिए नियति-सहज स्रोत है।

उक्त प्रकार के संपूर्ण स्रोतों को वांगमय रूप में अवतरित स्रोत स्वयं मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्व वाद) मानव को अपने गुणात्मक विकास क्रम सहज रूप में सुलभ हुआ है जिसके प्रणेता श्री ए. नागराज शर्मा श्री भजनाश्रम, नर्मदांचल, अमरकंटक जिला शहडोल हैं। वे स्वयं ही नियति सहज स्रोत हैं।

संक्षिप्त स्वरुप

शिक्षा का मानवीयकरण शिक्षित व्यक्ति में, मानवीय मूल्य चरित्र व नैतिकता की अविभाज्य अभिव्यक्ति संप्रेषणा और प्रकाशन के अर्थ में है। जिसकी धारक-वाहकता का दायित्व प्राथमिक रूप से शिक्षक को ही है। शिक्षक, शिक्षा के स्वरुप को जीते हुए शिक्षा प्रदान करने के अर्थ में शिक्षा का मानवीयकरण करना अभीप्सित स्वरुप है।

शिक्षा समुच्चय का स्वरुप, शिक्षा में प्रयोजित, नियोजित प्रमाण, प्रामाणिकतापूर्ण पद्धति (अनुभव बल की अभिव्यक्ति) है, सर्वतोमुखी समाधानपूर्ण प्रणाली की संप्रेषणा-(स्पष्ट अवधारणा सहित विवेचना व विश्लेषण पूर्ण विचार शैली) और न्याय पूर्ण, नीति युक्त जीने की कला का प्रकाशन (मानव तथा नैसर्गिक सम्बन्धों का मूल्यों की पहचान तथा निर्वाह) ही मानव परंपरा में, शिक्षा का संपूर्ण स्वरुप है, जिसकी गति स्वराज्य तथा स्वतंत्रता है।

शिक्षा में व्यवसाय तथा व्यवहार शिक्षा का अविभाज्य गति क्रम में ही प्रत्येक मनुष्य व्यवहार में सामाजिक ~~तथा~~ अर्थात सम्बन्धों व मूल्यों को पहचानने व निर्वाह करने की योग्यता साथ ही आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने की योग्यता प्रमाणित होती है। फलतः बौद्धिक समाधान और भौतिक समृद्धि, पारिवारिक और सामाजिक अभयता (अर्थात शिक्षा, व्यवस्था संविधान और आचरण में सामरस्यता, सह-अस्तित्व में प्रमाण और प्रामाणिकता) सर्व सुलभ होना ही शिक्षा का स्वरुप है।

मानव परंपरा में जीने की कला ही शिक्षा संस्कार का आद्यन्त प्रमाण है। मानव, शिक्षा संस्कार पूर्वक ही व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलम्बी होना; राज्य व्यवस्था में न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता,

और विनिमय सुलभता वर्तमान होना; संविधान व्यवस्था में मानवीय आचार संहिता उसका संरक्षण संवर्धन के रूप में होना; और प्रत्येक मनुष्य का आचरण, मानव तथा नैसर्गिक संबंधों की पहिचान तथा निर्वाह के रूप में शिक्षा का फलन प्रमाणित होता है।

व्यवसाय शिक्षा का उत्पादन कार्यों में परीक्षण + सर्वेक्षण + मूल्यांकन प्रणाली के विकास के लिए है। व्यवहार शिक्षा का जीवन-जागृति, प्रामाणिकता व सर्वतोमुखी समाधान के निरीक्षण + परीक्षण + मूल्यांकन ही मानवीकृत शिक्षा परंपरा की सहज गति और स्वरूप है।

मानवीकृत शिक्षा संस्कार परंपरा क्रम में प्रत्येक व्यक्ति में —
प्रतिभा = जानने + पहचानने + व्यक्तित्व = मानने + निर्वाह करने में पारंगत।
— जिसके लिए विज्ञान अर्थात् विश्लेषणात्मक तर्क शैली और विवेक अर्थात् जीवन जागृति क्रम में प्रयोजन सूत्र (नियम, सिद्धान्त, प्रक्रिया) में पारंगत और पारंगत बनाने की परंपरा ही शिक्षा का कार्य रूप है।

मानवीकृत शिक्षा का स्वरूप, प्रमाण (वर्तमान में — व्यवस्था (विश्वास और उसकी निरंतरता) के अर्थ में प्रत्येक व्यक्ति का आचरण व्यक्त होना, परिवार में व्यवस्था की परस्पर पहिचान व निर्वाह करना, राज्य व्यवस्था में न्याय सुलभता, विनिमय सुलभता, उत्पादन सुलभता, मानवीय शिक्षा संस्कार सुलभता की पहिचान और निर्वाह, संविधान व्यवस्था में मानवीय संस्कृति, सभ्यता पूर्ण आचरण का संरक्षण संवर्धन तथा प्रोत्साहित रूप में ही मानव परंपरा का नित्य सहज स्वरूप है।

शिक्षा में वस्तु का स्वरूप —

— जीवन विद्या

— ~~न~~ वस्तु विद्या

जीवन विद्या प्रत्येक मनुष्य में पाई जाने वाली आशा, विचार, इच्छा, संकल्प व अनुभव जैसी अक्षय शक्तियों का अध्ययन है, इसके लिए स्रोत जीवन ही है। जीवन एक विकास पूर्ण परमाणु है। परमाणु का गठनपूर्ण स्थिति में होना, नियति क्रम में होने वाली एक अद्भुत घटना है। ऐसे जीवन में उक्त पांचो शक्तियों का प्रत्येक मनुष्य में जीवन्तता पूर्वक प्रभावशील, कार्यशील एवं व्यवहार शील होना पाया जाता है। यही प्रत्येक मनुष्य के आचरण के मूल का सूत्र और व्याख्या का स्वरूप है।

अनुभव (जागृति) पूर्वक ही, प्रत्येक मनुष्य व्यवस्था को पहचानता है। व्यवस्था = वर्तमान में विश्वास एवं भविष्य में विश्वास की पूर्ण संभावना है।

वर्तमान में विश्वास ही चरित्र (मानवीय ~~चरि~~ आचरण) की क्रियान्वयन गति है।

विश्वास पूर्ण कार्य योजना, आश्वासन पूर्ण योजनाओं का रहना, प्रत्येक मनुष्य की अभीप्सा है, यही कार्यक्रम का आधार है।

जीवन विद्या व वस्तु विद्या का क्रियान्वयन स्वरूप —

— विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष का अध्ययन।
— मनोविज्ञान के साथ संस्कार पक्ष का अध्ययन।
— दर्शन शास्त्र के साथ क्रिया पक्ष का अध्ययन।
— अर्थशास्त्र के साथ प्राकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य के सदुपयोग एवं सुरक्षात्मक नीति पक्ष का अध्ययन।

- राज्यनीति शास्त्र के साथ मानवीयता का संरक्षण व संवर्धनात्मक नीति पक्ष का अध्ययन।
- समाज शास्त्र के साथ, संस्कृति, सभ्यता, विधि एवं व्यवस्था में सामरस्यात्मक नीति पक्ष का अध्ययन।
- साहित्य के साथ तात्विक पक्ष का अध्ययन।

पद्धति का स्वरूप — प्रतिभा व व्यक्तित्व का संतुलित उदय।

प्रणाली का स्वरूप - विवेक व विज्ञान सम्मत शैली।

नैतिकता का स्वरूप - व्यवहार में सामाजिक व व्यवसाय में स्वावलम्बी।

उक्त सभी स्वरूपों का प्रधान लक्ष्य अस्तित्व में जागृति पूर्वक अनुभव करने योग्य एक मात्र इकाई को सफल बना देना ही है। यही शिक्षा का प्रधान कर्तव्य है। जागृति क्रम में प्रवर्तन का यही तात्पर्य है।

क्रिया कलाप :- विश्लेषण स्वयं तर्क अवश्य होते हैं। ये तात्विकता के बिना ध्रुवीकृत नहीं होते हैं। इसलिए वर्तमान विज्ञान मानस, मानव के लिए अपूर्ण सिद्ध हो चुका है। विवेक का कार्यकलाप, विवेचनात्मक होता है। विवेचनाएं तात्विकता की संपूर्णता को सूचित एवं व्याख्यायित करती है। इसी तथ्य वश विज्ञान का, विवेक सम्मत होना एक अनिवार्य क्रिया कलाप है।

शिक्षा के मानवीय करण का प्रयोजन -

- शिक्षा, विद्यार्थी एवं शिक्षक में सामरस्यता स्थापित करना।
- व्यक्ति में स्वयं के प्रति विश्वास और श्रेष्ठता के प्रति सम्मान स्थापित करना।
- व्यक्ति के व्यवहार में सामाजिकता तथा व्यवसाय में स्वावलम्बन योग्यता को स्थापित करना।
- व्यक्ति में विनिमय तथा न्याय सुलभता पूर्वक स्वराज्य एवं स्वतंत्रता को अनुभव करने योग्य क्षमता को स्थापित करना।

ए. नागराज शर्मा
श्री भजनाश्रम, नर्मदांचल
अमरकंटक
जिला शहडोल (म.प्र.)